PANCHAKOTesSAYS
ISSN : 0976-4968
Vol-14, No.-2, November 2023

दलित चेतना की अभिव्यक्ति: तर्पण

मदन साह [1*]

[1*] प्राध्यापक (सेक्ट), हिन्दी विभाग, पंचकोट महाविद्यालय, सरबड़ी, पुरुलिया, 723121 (प0 बं0)
ई-मेल: madansah1992@gmail.com

शोधसार

हिन्दी के दलित कथाकारों में शिवमूर्ति का विशिष्ट स्थान है। अपने कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से दलितों के जीवन संघर्ष तथा प्रतिरोध को प्रस्तुत किया है। उपन्यासों में 'तर्पण', 'त्रिशूल' और 'आखिरी छलांग' प्रमुख है। 'केशर कस्तूरी' तथा 'कुच्ची का कानून' द्वारा इनकी कहानियों का संग्रह है। 'तर्पण' उपन्यास में जातिगत भेद-भाव के साथ स्त्री शोषण चित्रित हुआ है। यह उपन्यास शोषण को स्वीकार करनेवाले दलितों की कथा नहीं बल्कि शोषण का प्रतिरोध करने वाले दलितों की कथा है।

मुख्य शब्द : दलित, संघर्ष, शोषण, प्रतिरोध।

वर्तमान समय के हिन्दी साहित्य में शिवमूर्ति का विशिष्ट स्थान है। इनकी 'केशर कस्तूरी' तथा 'कुच्ची का कानून' जैसी कहानी-संग्रहों एवं 'त्रिशूल', 'तर्पण' तथा 'आखिरी छलांग' जैसे उपन्यासों ने न केवल हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया बल्कि समाज में दलितों की स्थिति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया। 'तर्पण' उपन्यास भारतीय समाज में सदियों से शोषित दलित और दलित समुदाय के प्रतिरोध और संघर्ष की कथा है। रजपत्ती, भाईजी, पियारे, मुन्ना, घरमू पंडित आदि पात्र अपनी पूरी सामाजिक-भौगोलिक संरचना के साथ इस उपन्यास में नजर आते हैं।

भारतीय समाज में 'तर्पण' एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसे मृत्यु के बाद आत्मा की शान्ति के लिए किया जाता है। शिवमूर्ति का 'तर्पण' उपन्यास दलितों के पूर्वजों के आत्मा शान्ति का तर्पण है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी बिना किसी प्रतिरोध के सवर्णों के शोषण का शिकार होते आ रहे दलितों की आत्माओं का तर्पण है। 'तर्पण' उपन्यास कलेवर में छोटा, परन्तु अपनी शैली में विशिष्ट है। यह उपन्यास सवर्णों के सैकड़ों वर्षों के शोषण का प्रतिरोध है। शिवमूर्ति जी के इस उपन्यास के सभी पात्र सवर्णों से लोहा लेते नजर आते हैं। लेखक ने इस उपन्यास में दलितों में आयी नयी चेतना तथा सवर्ण मानसिकता के प्रति दलितों के संघर्ष को प्रस्तुत किया है। सवर्णों की मानसिकता रही है कि वह हमेशा से दलितों को अपना जागीर सझा है। उसे वह केवल दास बनाकर रखना चाहा है। इसका कारण सवर्णों की वर्चस्ववादी विचारधारा रही है। 'तर्पण' में मौजूद दलित समाज एकजुट होने का प्रयास कर रहा है। वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है। वह गाँव के जमींदारों के प्रति काम बायकॉट करता

है। इसका प्रभाव जमींदारों एवं ठाकुरों की मानसिकता पर भी पड़ता है। तर्पण उपन्यास में जाति-व्यवस्था की कमियों और उनसे त्रस्त दलित जीवन का संघर्ष दर्शाया गया है। राजेश राव के शब्दों में – "शिवमूर्ति अपने उपन्यास 'तर्पण' में जाति-व्यवस्था के यथार्थ को बहुत बारीकी और मनोवैज्ञानिक तरीके से व्यक्त करते हैं।"[1] 'तर्पण' एक ऐसी उपन्यासिक कृति है, जो मनुष्य के सामाजिक व्यवस्था की सच्चाई को दर्शाता है।

उपन्यास की कथा का प्रारम्भ रजपतिया के चौधराइन के घर से काम कर के लौटने के साथ शुरू होता है। धरमू पंडित के खेत में मटर के पौधे पोल्ले को देखकर रजपती को लालच आ जाता है। वह मटर के पोल्ले को तोड़कर मुँह में रखने वाली थी, कि वैसे ही धरमू पंडित का बेटा चंदर उसे पकड़ लेता है। चंदर मौके का फायदा उठाकर रजपती से जबरदस्ती करना चाहता है। रजपती के चीखने पर खेतों में काम कर रहे परेमा की माँ, मिस्त्री बहू, सभी आकर रजपतिया की इज्जत लूटने से बचाते हैं। रजपतिया की इज्जत बच जाती है, परन्तु गाँव में इससे पूर्व कई दलित स्त्रियों की इज्जत लूट चुकी है। मिस्त्री बहू की ननद तथा रजपती की बड़ी बहन के साथ इस तरह की शोषण हो चुका था। इस तरह घटनाओं का परिणाम शोषित दलति स्त्री अपनी जान देकर चुकाती है। रजपती की बड़ी बहन इसी लोक-लाज के भय से कुएँ में कूदकर अपनी प्राणों की आहूति दे चुकी थी। राजेश राव की टिप्पणी इस सन्दर्भ में बहुत ही महत्तवपूर्ण है – "तर्पण हिन्दी समाज की वर्णाश्रम व्यवस्था की सड़ी-गली मान्यताओं की परत-दर-परत उघार देता है। इस उपन्यास में बड़ा-गाँव एक ऐसा गाँव है, जहाँ ठाकुरों, बाभनों के सैकड़ों सालों से चले आ रहे शोषण को दर्शाया गया है। बड़ी जातियाँ स्त्रियों के यौन-शोषण को हथियार के रूप में इस्तेमाल करती है।"[2] दलित समाज स्वयं को सवर्णों के सामने लाचार समझती थी, इसी लाचारी का फायदा सवर्ण सैकड़ों वर्षों से उठाते आ रहे हैं।

रजपती के साथ हुई इस घटना से दलित-समाज समर्पण नहीं करना चाहता है। वह इस प्रकार की घटना का विरोध करता है। रजपती का पिता पियारे धरमू पंडित के घर चेतावनी देने जाता है, परन्तु धरमू पंडित और उसकी पत्नी सवर्ण मानसिकता के दायरे से बाहर नहीं निकलते हैं। पंडिताईन कहती है – "उतान होकर गली-गली इठलाती घूमती है। गाँव भर के लड़कों को बर्बाद कर रही है। वह तुमको नजदर नहीं आता? जहाँ गुड़ रहेगा वहाँ चिऊँटा जाबै करेंगे।"[3] पंडिताइन स्वयं एक स्त्री है, फिर भी वह रजपती का साथ नहीं देती है। पियारे पंडिताइन को जवाब देते हुए कहता है – "अब हम ऊ चमार नहीं कि कान, पूँछ दबाकर सब सह, सुन लेंगे। चिऊँटे को गुड़ का मजा लेना महँगा कर देंगे।"[4] पियारे का यह कथन दलित में आई एक नयी चेतना का प्रतीक है। दलित अपने ऊपर हो रहे शोषण का विरोध कर रहे हैं।

पियारे के घर के आँगन में दलित समाज के लोगों में बैठकी करते हैं। उनका मानना है कि इस घटना की शिकायत हमें थाने में करानी चाहिए। पियारे जानता है कि पुलिस उसकी

मदद नहीं करेगा। वह एक तरफ बेटी का बाप है तो दूसरी तरफ मजदूर भी है। आर्थिक विपन्नता दलितों के लिए न्याय का दरवाजा बन्द कर देती है। परन्तु इस बार दलित समाज उन्हें मजा चखाना चाहती है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए दलित समाज, भाई जी के पास जाते हैं। भाईजी कहते हैं कि स्ट्रेटेजी बनना होगा, इसे रेप-केस लिखवाना होगा। पियारे झूठा रिपोर्ट लिखाना नहीं चाहता है। भाई जी उसे समझते हुए कहते हैं – "झूठ नहीं, स्ट्रेटेजी। कलयुग में सिर्फ सच के भरोसे जीत नहीं हो सकती है। वे तो हमेशा से ही स्ट्रेटेजी के तौर पर झूठ बोलते और जीतते आए हैं। सिर्फ एक झूठ बोलकर कि वे ब्रह्मा के मुँह से पैदा हुए हैं और हम पैर से, वे हजार साल से हमसे अपना पैर पुजवाते आ रहे हैं। अब झूठ बोलने का हमारा दाँव आया है तो हमारे गले में क्यों अटक रहा है।"[5] सवर्णों अपनी वर्चस्व को बनाये रखने के लिए तरह-तरह की रीति-रिवाजों का निर्माण किए हैं। ये रीति-रिवाज दलितों के आत्म-सम्मान तोड़ने की साजिश थी जिसे दलितों ने अब भाप लिया है। इस संदर्भ में राजेश राव का कथन बहुत ही सार्थक है – "दलित समाज के लिए सम्मान का प्रश्न सत्य का प्रश्न न होकर न्याय हासिल करने की लड़ाई है। वह सवर्णों के हथकंडों का जवाब उनके ही हथकंडों से देने की पुरजोर कोशिश करते हैं।"[6]

'तर्पण' उपन्यास की कथा-सामंती तंत्र पर दलितों की सेंध की कथा है। जिस तंत्र के दम पर सामंती जमींदार दलितों पर शोषण करता है। भाई जी उसी तंत्र में सेंध लगाता नजर आता है। वह भी सवर्णों के तर्ज पर झूठ, फरेब का सहारा लेता है और शोषण के प्रति आवाज उठाना सीख रहा है। यही कारण है कि चंदर को वे दो महीने तक जेल में रख पाते हैं। कानून अदालतों के दाँव-पेंच वह सीखता नजर आ रहा है। एक दलित द्वारा सवर्ण लड़के का जेल हो जाना, सवर्णों के लिए अपनी साख की बात है और दलितों के लिए अपनी अस्मिता की लड़ाई। दो महीने बाद चंदर छूट जाता है। शिवमूर्ति ने पियारे के पुत्र मुन्ना के द्वारा चंदर की नाक काटे जाने को दिखाया है। मुन्ना कहता है – "बाप रे ! इतना 'चीमर' होता है नाक का मांस? कि यह चाकू ही भुर्दार है।"[7] यहाँ नाक की मांस का चीमड़ होने का अर्थ सवर्णों के सैकड़ों वर्षों के वर्चस्व को दर्शाना है, जिसे इतनी आसानी से काटा नहीं जा सकता है। चाकू का भुर्दार होने से तात्पर्य दलित के संघर्ष की धार से है, जिसका तेज होना अतिआवश्यक है। भैया जी और मुन्ना द्वारा चंदर की नाक काट ली जाती है। पियारे निर्दोष होने के बावजूद इस घटना की जिम्मेदारी अपने सिर ले लेता है। वह कहता है – "मुझे जेल जाना है। जेल की रोटी खाकर प्रायश्चित करना है। प्रायश्चित इस पाप की कान-पूँछ दबाकर इतने दिनों तक उनलोगों का जोर-जुल्म सहता रह गया।"[8] जेल जाते समय उसे लगता है कि जैसे पुरखों का तर्पण करने के लिए वह 'गया-जगन्नाथ' जा रहा है। पियारे के जेल जाने के साथ सदियों से पाला हुआ जातिगत बैर भी विसर्जित किया जा रहा है। शोध-प्रतिशोध का पुराना हिसाब चुकता किया जा रहा है।

दलित जीवन के संघर्ष, प्रतिरोध एवं नयी चेतना का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में दिखाता है। दलित के जीवन का संजीव एवं प्रवाहपूर्ण चित्रण इस उपन्यास की अन्य प्रमुख विशेषता है।

संदर्भ सूची

1. राय ऋत्विक (सं0), लमही, राजेश राव, दलित मुक्ति का आख्यान, अक्टूबर-दिसम्बर-2012, लखनऊ, पृ.-131
2. वही, पृ.—130
3. शिवमूर्ति, तर्पण, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, नई दिल्ली, संस्करण-2010, पृ.-14
4. वही, पृ.-14
5. वही, पृ.-23
6. राय ऋत्विक (सं0), लमही, राजेश राव, दलित मुक्ति का आख्यान, अक्टूबर-दिसम्बर-2012, लखनऊ, पृ.-131
7. शिवमूर्ति, तर्पण, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, नई दिल्ली, संस्करण-2010, पृ.-107
8. वही, पृ.-116